Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

# बुंदेलखंड क्षेत्र मे महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक विकास

**कार्तिकेय सिंह[1], प्रोफेसर (डॉ.)अश्वजीत चौधरी[2]**

[1]*शोध छात्र पीएचडी , भूगोल विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद*

[2]*प्रोफेसर, भूगोल विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद*

**Article Info**
Volume 8, Issue 1
**Page Number :** 161-171

**Publication Issue :**
January-February-2025

**Article History**
Accepted : 20 Jan 2025
Published : 05 Feb 2025

***ऐब्स्ट्रैक्ट***– महिलाओं का सामाजिक–आर्थिकविकास उनके सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में समग्र प्रगति को दर्शाता है। किसी भी समाजमें महिलाओं की सामाजिक भागीदारी और साक्षरता को मापना, सामाजिक विकास का सर्वोत्तममापक माना जाता है। परंतु, गहराई से जड़ी हुई पितृसत्तात्मक व्यवस्था और महिलाओं कीद्वितीयक स्थिति उनके पिछड़ेपन का प्रमुख कारण है। इस अध्ययन में भारत की जनगणना 2001 और 2011, मध्यप्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2015–16, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के सांख्यिकी सार 2022, मानव विकास रिपोर्ट, योजना आयोग और नीति आयोग जैसे विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों औरसाहित्य का उपयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न तत्वों की स्थिति को स्पष्टकरने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण (Descriptive Statistical Analysis) अपनायागया है। महिलाओं के विकास का आकलन करने के लिए मानव विकास सूचकांक (HDI) का प्रयोगकिया गया है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर को सम्मिलित कर एक समग्र माप प्रदानकरता है। बुंदेलखंड क्षेत्र का क्षेत्रीय औसत राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी कम पायागया है। झाँसी का HDI सर्वाधिक (0.592) है, जबकि पन्ना जिले का सबसे कम (0.347) है।महिलाएं समाजिक व्यवस्था में पीछे रह गई हैं, जिसका कारण है– जागरूकता की कमी, शिक्षाकी कमी, व्यावसायिक ढांचे में कम भागीदारी, पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं में जकड़े रहना, और कृषि कार्यों में ही सीमित रहना। ये सभी कारक महिलाओं को विकास की मुख्यधारा सेदूर रखते हैं।

***प्रमुख शब्दावलियाँ :*** *मानव विकास, महिला, सामाजिक, आर्थिक, सामाजिक मान्यता, वर्णनात्मकसांख्यिकीय विश्लेषण।*

**1. परिचय-** बुंदेलखंड क्षेत्र मध्य भारत में स्थित एक पर्वतीय क्षेत्र है, जो उत्तर प्रदेश (यूपी) और मध्य प्रदेश (एमपी) में विभाजित है। यह क्षेत्र कुल तेरह जिलों में फैला हुआ है। ऐतिहासिक और भौगोलिक समानता के बावजूद वर्तमान में यह क्षेत्र दो राज्यों में विभाजित है।

**Copyright: ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

किसी भी देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में महिलाओं की स्थिति रीढ़ की हड्डी के समान होती है। महिलाओं का जीवन स्तर और सामाजिक–आर्थिक स्थिति विकासशील देशों, जैसे भारत, में समग्र विकास का महत्वपूर्ण पहलू है। ऐसे देशों में वास्तविक विकास तभी संभव है, जब महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण समान रूप से सुनिश्चित हो। महिलाओं की पिछड़ी स्थिति राष्ट्र की शांति, समृद्धि और कल्याण को प्रभावित करती है, क्योंकि जब आधी आबादी ही समस्याओं से जूझ रही हो तो देश कैसे प्रगति कर सकता है?

महिलाओं को दुनिया भर में भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है, और भारत भी इससे अछूता नहीं है। यह देश परंपराओं, रीति–रिवाजों और आस्थाओं का प्रतीक है, जो समय के साथ बदलती रहती हैं। विडंबना यह है कि एक ओर हम देवी की पूजा करते हैं, देश को "भारत माता" कहते हैं, वहीं दूसरी ओर महिलाओं के साथ घर और बाहर दोनों जगह बुरा व्यवहार किया जाता है।

हालांकि, वर्षों में महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है और लिंग असमानता कुछ हद तक कम हुई है, फिर भी शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक संसाधनों, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अवसरों में महिलाओं की पहुंच सीमित बनी हुई है। शिक्षा एक ऐसा साधन है, जो महिलाओं को समाज में पुरुषों के समान अवसर प्रदान करने में सक्षम बनाता है। शिक्षा महिलाओं की छिपी हुई प्रतिभा, क्षमताओं और मूल्य को उजागर करती है, जिससे समाज में उनका दर्जा ऊंचा होता है। इसके अलावा, शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को कृषि के अतिरिक्त गैर–कृषि क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिलते हैं।

### 1.2 अनुसंधान पद्धति

**1.2.1 डेटा स्रोत-** अध्ययन में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त साहित्य और आंकड़ों का उपयोग किया गया है, जैसे:

भारत की जनगणना, 2001 और 2011,

मध्य प्रदेश का राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) 2015–16,

उत्तर प्रदेश का राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) 2015–16,

उत्तर प्रदेश का सांख्यिकीय सारांश, 2022,

मध्य प्रदेश का सांख्यिकीय सारांश, 2022,

भारत सरकार का मानव विकास रिपोर्ट नीति आयोग और सांख्यिकी विभाग ।

इन स्रोतों से सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी आंकड़े प्राप्त किए गए हैं।

**1.2.2 डेटा विश्लेषण -** इस अध्ययन में अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न तत्वों की स्थिति को दर्शाने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं की वर्तमान सामाजिक और आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए सांख्यिकीय तालिकाओं का उपयोग किया गया है। बुंदेलखंड में महिलाओं के विकास का आकलन करने के लिए मानव विकास अनुक्रमण (Human Development Indexing) का उपयोग किया गया है। महिलाओं के विकास स्तर में क्षेत्रीय असमानताओं और विसंगतियों को मापने के लिए समग्र सूचकांक (Composite Index) विधि का प्रयोग किया गया है। गणना की प्रक्रिया निम्नलिखित है:

**पहला चरण:**

विकास के संकेतकों (Variables X) का चयन किया गया है।

**दूसरा चरण:**

प्रत्येक चयनित विकास संकेतक का औसत (Xi) निकाला गया है। औसत की गणना का सूत्र निम्नलिखित है: $\sum X / N$

जहां:

$\sum X$ = सभी संकेतकों के मान का योग।

N = कुल आवृत्ति।

तीसरा चरण:

प्रत्येक स्तर पर संकेतक मान का विचलन (d) निम्नलिखित सूत्र द्वारा निकाला गया है:

$(X- Xi)$

जहां:

X = प्रत्येक स्तर पर संकेतक का मान।

Xi = क्रमिक संकेतकों का औसत।

**चौथा चरण:**

मानक विचलन (Standard Deviation) की गणना निम्नलिखित सूत्र द्वारा की गई है:

$$SD= \sqrt{\sum D^2/N-1}$$

जहां:

$\sum D^2$ = सभी विचलनों के वर्ग मान का योग।

N = कुल आवृत्ति।

**पांचवां चरण:**

मानक स्कोर (I) की गणना प्रत्येक संकेतक के विचलन (X - Xi) को मानक विचलन (SD) से विभाजित करके की गई है:

$(X - Xi / SD)$

छठा चरण:

सभी मानक स्कोर का योग करके कुल मान (Gross Value) निकाला गया है।

**सातवां चरण:**

समग्र सूचकांक स्कोर (Composite Index Score) की गणना कुल मान को विकास संकेतकों की कुल संख्या से विभाजित करके की गई है।

### 1.3 महिलाओं का बुंदेलखंड क्षेत्र में विकास स्तर

#### 1.3.1 महिलाओं का सामाजिक विकास

महिलाओं का सामाजिक विकास समाज में उनकी स्थिति को दर्शाता है। सामाजिक विकास को मापने का सबसे अच्छा तरीका महिलाओं की समाज में भागीदारी और साक्षरता दर को मापना है। सामाजिक विकास सूचकांक (Social Development Index) चार संकेतकों के आधार पर तैयार किया गया है - लिंगानुपात, पुरुष साक्षरता दर, महिला साक्षरता दर।

लिंगानुपात को प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या के रूप में मापा गया है। संतुलित लिंगानुपात समाज में लैंगिक समानता को दर्शाता है। असंतुलित लिंगानुपात के पीछे मुख्य कारण लिंग-चयनात्मक गर्भपात, कन्या भ्रूण हत्या, नवजात बालिकाओं की उपेक्षा, और उन्हें पर्याप्त पोषण न मिलना है। बालिकाओं को कम उम्र में घरेलू कामकाज और छोटे भाई-बहनों

की देखभाल का बोझ उठाने के लिए मजबूर किया जाता है। समाज में गहरी जमी पितृसत्ता और महिलाओं की द्वितीयक स्थिति उनके खराब सामाजिक हालात के लिए जिम्मेदार है।

पुरुष और महिला साक्षरता दर समाज में विकास की स्थिति को सीधे तौर पर दर्शाती है। महिला साक्षरता दर उनकी शिक्षा तक पहुंच को प्रतिबिंबित करती है, जो केवल शैक्षणिक संस्थानों की उपलब्धता पर ही निर्भर नहीं है, बल्कि सामाजिक बंधनों पर भी निर्भर करती है।

कई बार समाज में सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण लड़कियों को एक निश्चित उम्र के बाद स्कूल भेजने से हतोत्साहित किया जाता है। विशेष रूप से पिछड़े क्षेत्रों, जैसे बुंदेलखंड में, यह स्थिति अधिक गंभीर है।

2001 के आंकड़ों के अनुसार, झांसी, सागर, दतिया और दमोह बुंदेलखंड क्षेत्र के सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाले जिले थे। इन जिलों का उच्च प्रदर्शन मुख्य रूप से बेहतर साक्षरता दर और शहरीकरण की अधिक दर के कारण था। हालांकि, दमोह को छोड़कर अन्य सभी उच्च प्रदर्शन वाले जिलों में लिंगानुपात चिंताजनक रूप से 900 से नीचे था। दमोह में पुरुष और महिला साक्षरता में 25 प्रतिशत से अधिक का अंतर था।

मध्यम विकास वाले जिलों में पन्ना, जालौन, चित्रकूट और टीकमगढ़ शामिल थे। जबकि, छतरपुर, महोबा, हमीरपुर, बांदा और ललितपुर सामाजिक विकास संकेतकों में सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले जिले थे। इन जिलों का प्रदर्शन लगभग सभी सामाजिक विकास संकेतकों में कमजोर था। यहां शहरीकरण की स्थिति अत्यंत निम्न थी और पुरुष तथा महिला साक्षरता के बीच का अंतर अधिक था।

आंतर-क्षेत्रीय स्तर पर, झांसी को छोड़कर, सभी उच्च प्रदर्शन वाले जिले बुंदेलखंड के मध्य प्रदेश क्षेत्र में स्थित हैं। वहीं, उत्तर प्रदेश में स्थित बुंदेलखंड के जिले सामाजिक विकास के मामले में मध्य प्रदेश से काफी पीछे हैं। सामाजिक विकास स्तर में जिलों के बीच भारी अंतर है, जहां झांसी और सागर का सूचकांक 8.0 से अधिक है, जबकि बांदा और ललितपुर का सूचकांक 2.0 से भी कम (चित्र 4.1) है।

2011 के आंकड़ों के अनुसार, सामाजिक विकास में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले जिले झांसी और सागर हैं। जबकि, दमोह, जालौन और दतिया मध्यम प्रदर्शन करने वाले जिले हैं। 2001 में जालौन को छोड़कर, दमोह और दतिया उच्च प्रदर्शन वाले जिलों में शामिल थे। यह बदलाव स्पष्ट रूप से सांस्कृतिक बाधाओं और पितृसत्ता की पकड़ के कमजोर होने को दर्शाता है। साथ ही, आधुनिकता का धीरे-धीरे प्रभाव बढ़ रहा है, जहां लैंगिक समानता एक महत्वपूर्ण लक्ष्य के रूप में स्वीकार की जा रही है।

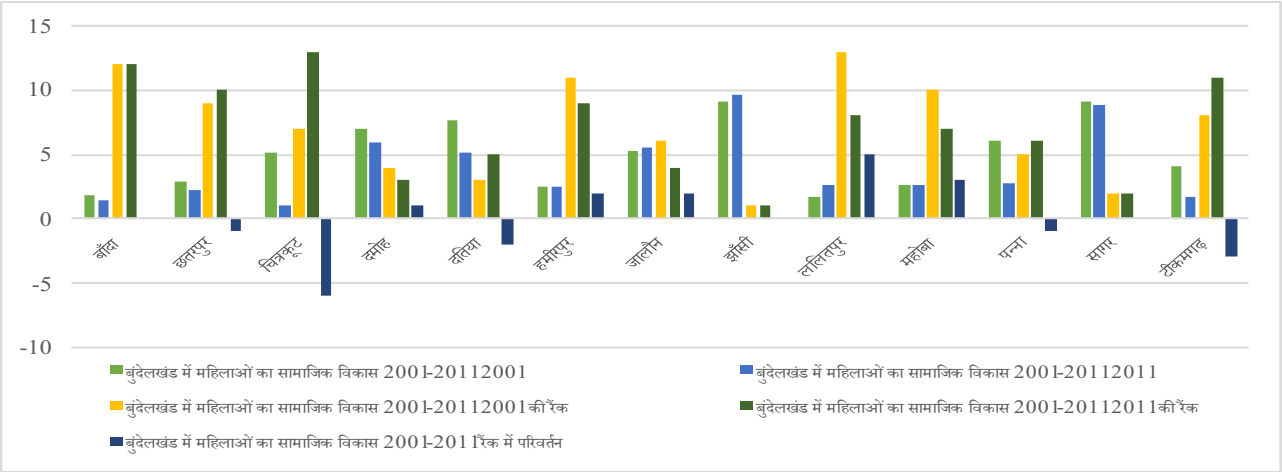


**चित्र1: बुंदेलखंड में महिलाओं का सामाजिक विकास का स्तर**

2001 से 2011 के बीच सामाजिक विकास श्रेणी में कमजोर प्रदर्शन करने वाले जिलों की संख्या 6 से बढ़कर 8 हो गई है। इनमें पन्ना, महोबा, ललितपुर, हमीरपुर, छतरपुर, टीकमगढ़, बांदा और चित्रकूट शामिल हैं। इन सभी आठ जिलों का सामाजिक विकास स्तर निम्न रहने का मुख्य कारण पुरुष और महिला साक्षरता दर का कम होना तथा शहरी आबादी का प्रतिशत कम होना है, हालांकि इन जिलों ने लिंगानुपात में अपेक्षाकृत अच्छा प्रदर्शन किया है।

बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकांश जिलों का सामाजिक विकास में खराब प्रदर्शन इस क्षेत्र की पिछड़ी स्थिति को दर्शाता है। हालांकि, सभी संकेतकों में कुछ हद तक सुधार हुआ है, लेकिन यह वांछित स्तर से काफी कम है।

**तालिका 1 : बुंदेलखंड में महिलाओं का सामाजिक विकास 2001-2011**

| जिला | 2001 | 2011 | 2001 की रैंक | 2011 की रैंक | रैंक में परिवर्तन |
|---|---|---|---|---|---|
| बाँदा | 1.85 | 1.42 | 12 | 12 | 0 |
| छतरपुर | 2.94 | 2.18 | 9 | 10 | -1 |
| चित्रकूट | 5.08 | 1.09 | 7 | 13 | -6 |
| दमोह | 7.05 | 5.94 | 4 | 3 | 1 |
| दतिया | 7.62 | 5.15 | 3 | 5 | -2 |
| हमीरपुर | 2.5 | 2.52 | 11 | 9 | 2 |
| जालौन | 5.27 | 5.53 | 6 | 4 | 2 |
| झाँसी | 9.07 | 9.61 | 1 | 1 | 0 |
| ललितपुर | 1.66 | 2.61 | 13 | 8 | 5 |
| महोबा | 2.64 | 2.61 | 10 | 7 | 3 |
| पन्ना | 6.1 | 2.78 | 5 | 6 | -1 |
| सागर | 9.07 | 8.81 | 2 | 2 | 0 |
| टीकमगढ़ | 4.14 | 1.74 | 8 | 11 | -3 |

**स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है**

महिला साक्षरता के मामले में क्षेत्र ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, जहां अधिकांश जिलों में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला है। कुछ जिले जैसे ललितपुर, बांदा, महोबा और हमीरपुर ने एक दशक में लगभग 20 प्रतिशत का साक्षरता वृद्धि दर्ज की है, जो अत्यधिक प्रभावशाली है। लिंगानुपात में भी कुछ जिलों ने बेहतर प्रदर्शन किया है। ललितपुर, छतरपुर और झांसी में लिंगानुपात में क्रमश: 24 प्रतिशत, 24 प्रतिशत और 19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

2011 के आंतर-क्षेत्रीय आंकड़ों (तालिका 4.1) के अनुसार, जालौन को छोड़कर अधिकांश जिलों की स्थिति 2001 जैसी ही बनी हुई है। मध्य प्रदेश क्षेत्र के अधिकांश जिले, छतरपुर और टीकमगढ़ को छोड़कर, उच्च और मध्यम प्रदर्शन श्रेणी में आते हैं। बुंदेलखंड के उत्तर प्रदेश क्षेत्र में झांसी, जो 2001 में भी शीर्ष पर था, 2011 में भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला जिला बना

हुआ है। जालौन ने इस अवधि में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया है। 2001 की तरह ही 2011 में भी विकास स्तर में काफी भिन्नता देखी गई है। झांसी और सागर का सामाजिक विकास सूचकांक 8.0 से अधिक है, जबकि टीकमगढ़, बांदा और चित्रकूट का सूचकांक 2.0 से कम है।

जिलों की रैंक उनके आपसी प्रदर्शन की स्थिति को दर्शाती है। मध्यम और निम्न श्रेणी के जिलों में रैंक में सबसे अधिक परिवर्तन देखने को मिला है। चित्रकूट (-6), टीकमगढ़ (-3), दतिया (-2), छतरपुर (-1) और पन्ना (-1) की रैंक घटी है, जबकि ललितपुर (+5), महोबा (+3), हमीरपुर (+2), जालौन (+2) और दमोह (+1) ने अपनी रैंकिंग में सुधार किया है। झांसी, सागर और बांदा की रैंक में कोई बदलाव नहीं हुआ है - ये क्रमश: पहले, दूसरे और बारहवें स्थान पर बने हुए हैं।

2001 और 2011 दोनों में यह देखा गया है कि पुरुष और महिला साक्षरता दर का जिलों के सामाजिक विकास पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। इसके बाद शहरी आबादी का प्रतिशत सामाजिक विकास को प्रभावित करता है, जबकि लिंगानुपात का प्रभाव सबसे कम होता है।

### 1.3.2 महिलाओं का आर्थिक विकास

महिलाओं का आर्थिक विकास उनके कार्यबल में भागीदारी, संसाधनों तक पहुंच और प्रति व्यक्ति आय जैसे आर्थिक मानकों पर आधारित है। कार्यबल में भागीदारी श्रम बल की मांग और आपूर्ति की स्थिति पर निर्भर करती है। औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में वृद्धि से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। वहीं, आपूर्ति पक्ष में कामकाजी आयु वर्ग (14-59 वर्ष) की शारीरिक क्षमता, किसी विशेष कार्य के लिए आवश्यक कौशल और कार्य करने की इच्छा महत्वपूर्ण होती है।

आर्थिक समग्र विकास सूचकांक तीन संकेतकों के आधार पर तैयार किया गया है: घरेलू उद्योग क्षेत्र में मुख्य श्रमिकों का प्रतिशत।सेवा क्षेत्र में कार्यरत परिवारों का प्रतिशत, बैंकिंग सुविधा का लाभ उठाने वाले परिवारों का प्रतिशत। बुंदेलखंड क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के जिले आर्थिक विकास में मध्य प्रदेश के जिलों की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं। झांसी का आर्थिक विकास सूचकांक 10.0 से अधिक है, जबकि चित्रकूट और बांदा का सूचकांक 2.0 से कम है।

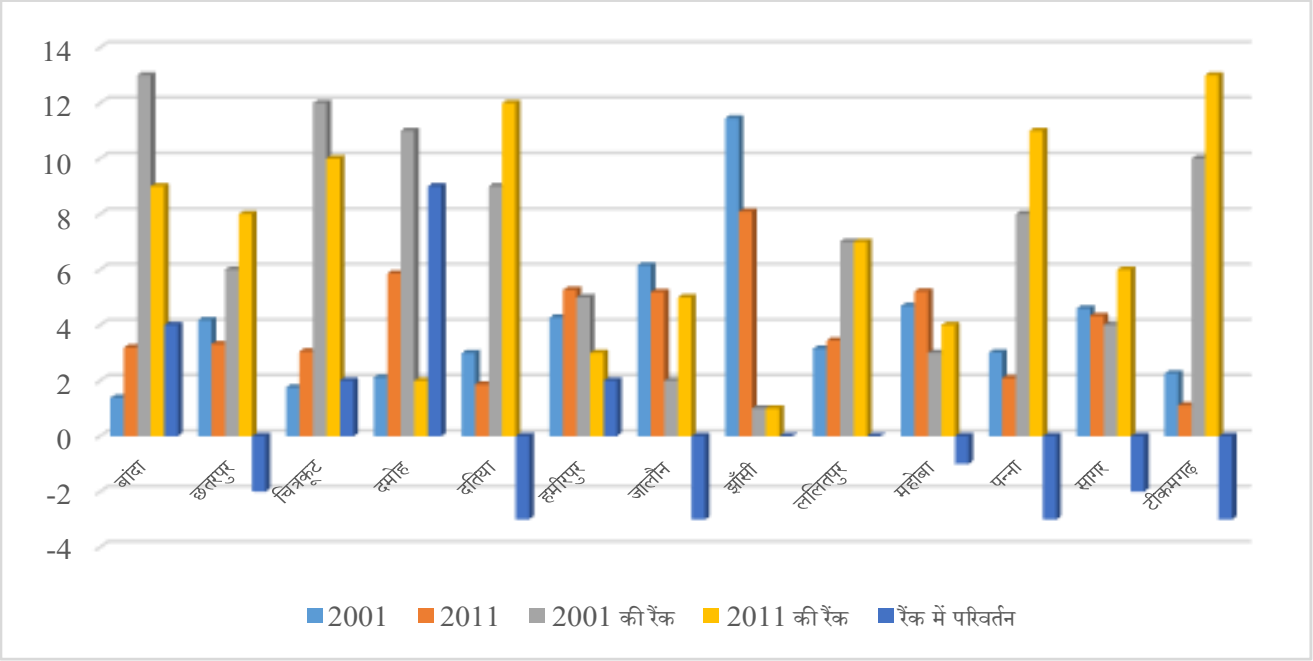


**चित्र2 : बुंदेलखंड में महिलाओं के आर्थिक विकास का स्तर**

बुंदेलखंड के मध्य प्रदेश क्षेत्र के अधिकांश जिलों में महिलाओं का आर्थिक विकास स्तर लगभग समान और निम्न है। बुंदेलखंड में झांसी आर्थिक रूप से सबसे विकसित जिला है, क्योंकि यह आर्थिक विकास के तीनों संकेतकों में शीर्ष स्थान पर है। झांसी ही एकमात्र जिला है जो अत्यधिक विकसित श्रेणी में आता है, क्योंकि इसके बाद का निकटतम जिला आर्थिक संकेतकों के मानक में झांसी से काफी पीछे है।

जालौन, जो महिलाओं के आर्थिक विकास में मध्यम श्रेणी में आता है, को छोड़कर बुंदेलखंड के अन्य सभी ग्यारह जिलों में आर्थिक संकेतकों का स्तर लगभग समान है और ये सभी शीर्ष प्रदर्शनकर्ता जिले (झांसी) से काफी पीछे हैं।

2011 के आंकड़ों के अनुसार, आर्थिक विकास में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले दो जिले झांसी (8.09) और दमोह (5.86) हैं। दमोह ने इस दशक में तीसरे स्थान से छलांग लगाकर दूसरे स्थान पर पहुंचकर उल्लेखनीय सुधार किया है।मध्यम प्रदर्शन वाले जिले हैं:हमीरपुर (5.27)महोबा (5.21)जालौन (5.19)सागर (4.33)कमज़ोर प्रदर्शन करने वाले जिले हैं:ललितपुर (3.44)छतरपुर (3.31)बांदा (3.19)चित्रकूट (3.05)पन्ना (2.09)दतिया (1.86)टीकमगढ़ (1.11)ये जिले महिलाओं के आर्थिक विकास में सबसे निचले स्तर पर हैं।

**तालिका 2: बुंदेलखंड में महिलाओं का आर्थिक विकास 2001-2011**

| **बुंदेलखंड में महिलाओं का आर्थिक विकास 2001-2011** | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **जिला** | **2001** | **2011** | **2001 की रैंक** | **2011 की रैंक** | **रैंक में परिवर्तन** |
| बांदा | 1.38 | 3.19 | 13 | 9 | 4 |
| छतरपुर | 4.18 | 3.31 | 6 | 8 | −2 |
| चित्रकूट | 1.75 | 3.05 | 12 | 10 | 2 |
| दमोह | 2.11 | 5.86 | 11 | 2 | 9 |
| दतिया | 2.99 | 1.86 | 9 | 12 | −3 |
| हमीरपुर | 4.27 | 5.27 | 5 | 3 | 2 |
| जालौन | 6.15 | 5.19 | 2 | 5 | −3 |
| झाँसी | 11.45 | 8.09 | 1 | 1 | 0 |
| ललितपुर | 3.15 | 3.44 | 7 | 7 | 0 |
| महोबा | 4.69 | 5.21 | 3 | 4 | −1 |
| पन्ना | 3.01 | 2.09 | 8 | 11 | −3 |
| सागर | 4.6 | 4.33 | 4 | 6 | −2 |
| टीकमगढ़ | 2.26 | 1.11 | 10 | 13 | −3 |

**स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है**

झांसी और दमोह में बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठाने वाले परिवारों की संख्या कम होने के बावजूद, ये जिले महिलाओं के आर्थिक विकास में उच्च स्तर पर हैं। इसका मुख्य कारण घरेलू उद्योग और सेवा क्षेत्र में मुख्य श्रमिकों का अधिक प्रतिशत होना है। दमोह में घरेलू उद्योग क्षेत्र में मुख्य श्रमिकों की भागीदारी में लगभग 8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जो अन्य जिलों की तुलना में अद्वितीय उपलब्धि है। इसका प्रमुख कारण पंजीकृत इकाइयों की संख्या में वृद्धि है, जो 2001 में 110 से बढ़कर 2011 में 403 हो गई। कमजोर प्रदर्शन करने वाले जिलों में महिलाओं के आर्थिक विकास का स्तर कम है क्योंकि

इनमें घरेलू उद्योग और सेवा क्षेत्र में मुख्य श्रमिकों का प्रतिशत काफी कम है। 2001 से 2011 के बीच लगभग सभी जिलों में संसाधन सुविधाओं तक पहुंच में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। कुछ जिलों जैसे चित्रकूट, हमीरपुर, जालौन, महोबा और ललितपुर में यह सुधार 45 प्रतिशत से अधिक दर्ज किया गया है। आंतर-क्षेत्रीय श्रेणी में, दमोह (जो बुंदेलखंड के मध्य प्रदेश क्षेत्र में स्थित है) को छोड़कर, किसी भी जिले में उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ है। उत्तर प्रदेश क्षेत्र में स्थित हमीरपुर, महोबा और जालौन की स्थिति लगभग समान बनी हुई है।

महिलाओं के आर्थिक विकास स्तर में यह भिन्नता समाज की महिलाओं के प्रति असंतुलित दृष्टिकोण को दर्शाती है। 2001 से 2011 के बीच जिलों की रैंक में विशेष परिवर्तन नहीं देखा गया, सिवाय दमोह के। दतिया (-3), जालौन (-3), पन्ना (-3), टीकमगढ़ (-3), सागर (-2), छतरपुर (-2) और महोबा (-1) की रैंक घटी है, जबकि दमोह (+9), बांदा (+4), चित्रकूट (+2) और हमीरपुर (+2) ने अपनी रैंक में सुधार किया है। दमोह ने 11वें स्थान से छलांग लगाकर 2वें स्थान पर पहुंचकर सबसे अधिक सुधार किया है। वहीं, झांसी और ललितपुर की रैंक 2001 से 2011 के बीच अपरिवर्तित रही, ये क्रमशः पहले और दूसरे स्थान पर बनी हुई हैं।

**1.3.3 स्वास्थ्य**

महिलाओं का स्वास्थ्य विकास देश के हर हिस्से में महत्वपूर्ण है, जो स्वास्थ्य सुविधाओं और बुनियादी ढांचे पर निर्भर करता है। स्वास्थ्य ढांचे का निर्माण बुनियादी और आवश्यक है, लेकिन डॉक्टर, नर्स और जांच सुविधाओं की उपलब्धता का इससे भी अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सांस्कृतिक मान्यताओं, भौतिक पहुंच (जैसे सड़क) और एम्बुलेंस तथा चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता पर निर्भर करती है। महिला स्वास्थ्य सूचकांक निम्नलिखित संकेतकों के आधार पर तैयार किया गया है: प्रति 3000 जनसंख्या पर प्राथमिक स्वास्थ्य उप-केंद्र (PHSC) की संख्या, प्रति 30,000 जनसंख्या पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHC) की संख्या, पूर्ण गर्भवती देखभाल (ANC) प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत, संस्थागत प्रसव करने वाली महिलाओं का प्रतिशत और 13-23 महीने के आयु वर्ग के पूर्ण रूप से टीकाकरण वाले बच्चों का प्रतिशत। बुंदेलखंड जैसे पिछड़े क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी ढांचा मुख्य रूप से सरकारी नीतियों पर निर्भर है। निजी क्षेत्र इस क्षेत्र में कम रुचि रखता है क्योंकि यहां लाभ कम और निवेश की मांग अधिक है। 2001 में सागर (9.16), दमोह (8.76), हमीरपुर (8.19), दतिया (7.52), झांसी (6.99) और छतरपुर (6.74) शीर्ष प्रदर्शन करने वाले जिले थे। हालांकि ये जिले उच्च प्रदर्शनकर्ता थे, लेकिन इनमें से किसी का भी प्रदर्शन राष्ट्रीय औसत के करीब नहीं था। केवल PHSC की संख्या ही ऐसा संकेतक था जो मध्यम स्तर की स्थिति में था। अन्य संकेतक जैसे पूर्ण गर्भवती देखभाल, संस्थागत प्रसव और पूर्ण टीकाकरण में ये जिले राष्ट्रीय औसत से काफी पीछे थे। मध्यम प्रदर्शन वाले जिले पन्ना (6.30), ललितपुर (6.20), टीकमगढ़ (4.64) और जालौन (4.09) थे। सागर, दमोह, हमीरपुर, दतिया, झांसी और छतरपुर ने कुछ स्वास्थ्य संकेतकों में अच्छा प्रदर्शन किया, जबकि अन्य में मध्यम प्रदर्शन किया, जिससे इनका समग्र स्वास्थ्य विकास स्तर उच्च रहा। उदाहरण के लिए, दमोह ने PHC की उपलब्धता में पहला स्थान प्राप्त किया, ANC प्राप्त करने में तीसरा, संस्थागत प्रसव में छठा, पूर्ण टीकाकरण में छठा और PHSC की उपलब्धता में आठवां स्थान प्राप्त किया। वहीं, बांदा जिले ने ANC में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन बाकी सभी स्वास्थ्य संकेतकों में खराब प्रदर्शन किया, जिससे यह निम्न स्तर के स्वास्थ्य विकास वाले जिले में शामिल हो गया। चित्रकूट (4.01) और महोबा (4.00) भी निम्न स्तर के प्रदर्शनकर्ता रहे, जबकि केवल बांदा स्वास्थ्य संकेतकों में सबसे कमजोर प्रदर्शन करने वाला जिला था।

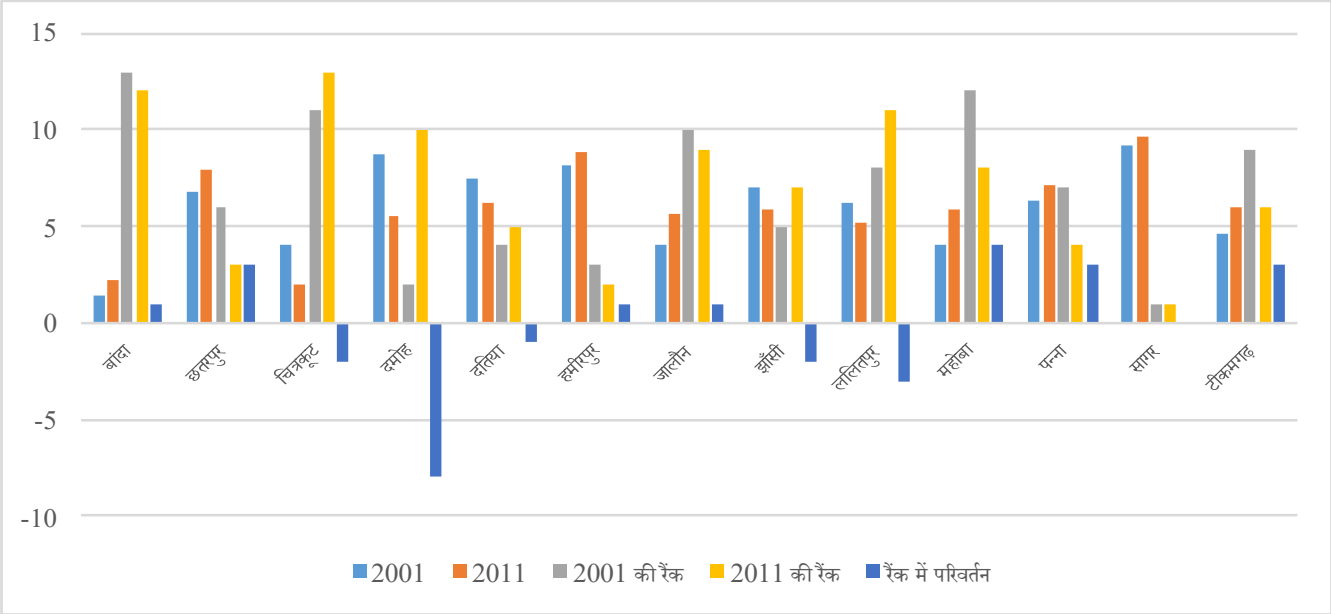


**चित्र 3 : बुंदेलखंड मे महिला स्वास्थ्य का विकास 2001-2011**

2001 के स्वास्थ्य विकास सूचकांक में, बुंदेलखंड क्षेत्र के उत्तर प्रदेश भाग की स्थिति मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र की तुलना में अधिक पिछड़ी हुई थी। 2011 के आंकड़ों के अनुसार, स्वास्थ्य संबंधी संकेतकों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले जिले सागर (9.66), हमीरपुर (8.87) और छतरपुर (7.91) हैं। इन जिलों का बेहतर प्रदर्शन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHC) की संख्या, पूर्ण गर्भवती देखभाल (ANC) प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत और संस्थागत प्रसव में उत्कृष्ट प्रदर्शन के कारण है। पन्ना (7.09), दतिया (6.22), टीकमगढ़ (5.97), झांसी (5.85), महोबा (5.83), जालौन (5.64), दमोह (5.50) और ललितपुर (5.23) मध्यम स्तर के प्रदर्शन वाले जिले हैं। वहीं, बांदा (2.26) और चित्रकूट (1.97) स्वास्थ्य संकेतकों में निम्न स्तर के प्रदर्शन वाले जिले हैं।

अधिकांश संकेतकों में प्रति 3000 जनसंख्या पर PHSC की संख्या में कमी आई है। इसका प्रमुख कारण यह है कि उप-केंद्रों की संख्या स्थिर बनी हुई है, लेकिन उच्च जनसंख्या वृद्धि दर के कारण क्षेत्र की जनसंख्या बढ़ गई है। PHC की श्रेणी में, केंद्रों की संख्या में मामूली वृद्धि हुई है। इसका अर्थ है कि PHC की वृद्धि, जनसंख्या वृद्धि के साथ समानुपातिक रही है। 2001 से 2011 के दौरान, संस्थागत प्रसव की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसका अधिकतम आंकड़ा 51 प्रतिशत तक पहुंचा, जो उसी वर्ष के राष्ट्रीय औसत (लगभग 70 प्रतिशत) से काफी कम है (तालिका 4.3)।

पूर्ण गर्भवती देखभाल और 12-23 महीने की आयु के बच्चों के पूर्ण टीकाकरण के मामले में स्थिति स्पष्ट नहीं है। केवल कुछ जिलों में टीकाकरण में वृद्धि दर्ज की गई है। सागर, हमीरपुर और छतरपुर ने पांच में से तीन स्वास्थ्य संकेतकों में अच्छा प्रदर्शन किया है। इन जिलों के मजबूत प्रदर्शन ने इनके समग्र सूचकांक को अन्य जिलों की तुलना में बेहतर बनाया और इन्हें स्वास्थ्य विकास सूचकांक में उच्च स्तर पर रखा।

बांदा और चित्रकूट को PHC की उपलब्धता को छोड़कर अन्य सभी संकेतकों में सबसे निचला स्थान प्राप्त हुआ है। इसके कारण इन जिलों का स्वास्थ्य सूचकांक सबसे खराब रहा और इन्हें निम्न स्तर के स्वास्थ्य विकास वाले समूह में धकेल दिया। आंतर-क्षेत्रीय आंकड़े दर्शाते हैं कि स्वास्थ्य संकेतकों के मामले में मध्य प्रदेश का बुंदेलखंड भाग उत्तर प्रदेश के हिस्से की तुलना में काफी बेहतर स्थिति में है।

**तालिका 3 : बुंदेलखंड मे महिला स्वास्थ्य का विकास 2001-2011**

| बुंदेलखंड मे महिला स्वास्थ्य का विकास 2001-2011 | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **जिला** | **2001** | **2011** | **2001 की रैंक** | **2011 की रैंक** | **रैंक में परिवर्तन** |
| **बांदा** | **1.41** | **2.26** | **13** | **12** | **1** |
| **छतरपुर** | **6.74** | **7.91** | **6** | **3** | **3** |
| **चित्रकूट** | **4.01** | **1.97** | **11** | **13** | **-2** |
| **दमोह** | **8.76** | **5.5** | **2** | **10** | **-8** |
| **दतिया** | **7.52** | **6.22** | **4** | **5** | **-1** |
| **हमीरपुर** | **8.19** | **8.87** | **3** | **2** | **1** |
| **जालौन** | **4.09** | **5.64** | **10** | **9** | **1** |
| **झाँसी** | **6.99** | **5.85** | **5** | **7** | **-2** |
| **ललितपुर** | **6.2** | **5.23** | **8** | **11** | **-3** |
| **महोबा** | **4** | **5.83** | **12** | **8** | **4** |
| **पन्ना** | **6.3** | **7.09** | **7** | **4** | **3** |
| **सागर** | **9.16** | **9.66** | **1** | **1** | **0** |
| **टीकमगढ़** | **4.64** | **5.97** | **9** | **6** | **3** |

**स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है**

ज्यादातर उच्च और मध्यम प्रदर्शन करने वाले जिले बुंदेलखंड के मध्य प्रदेश भाग में स्थित हैं। यहां दो संकेतकों में महत्वपूर्ण अंतर देखने को मिला है। पहला, पूर्ण गर्भवती देखभाल (ANC) प्राप्त करने वाली महिलाओं के प्रतिशत में 2001 से 2011 की अवधि के दौरान, उत्तर प्रदेश के जिलों में गिरावट दर्ज की गई है, जबकि मध्य प्रदेश के जिलों में इसमें वृद्धि हुई है। दूसरा, 12–23 महीने की आयु के बच्चों के पूर्ण टीकाकरण के मामले में, मध्य प्रदेश के जिलों में ज्यादातर जगहों पर आंकड़ों में गिरावट आई है, जबकि उत्तर प्रदेश के जिलों में वृद्धि दर्ज की गई है। स्वास्थ्य संकेतकों में जिलों के बीच भारी अंतर देखा गया है। यह अंतर चित्रकूट (2.0) से लेकर सागर (लगभग 10) तक है, जो क्षेत्रीय असमानता को दर्शाता है।

**1.4निष्कर्ष**

महिलाएं अस्तित्व की व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उनका विकास समाज की समग्र प्रगति के लिए अनिवार्य है। किसी भी देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका रीढ़ की हड्डी के समान होती है। महिलाओं की पिछड़ी स्थिति राष्ट्र की शांति, समृद्धि और कल्याण को प्रभावित करती है।

इस अध्ययन में बुंदेलखंड क्षेत्र में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य विकास का मूल्यांकन किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि अधिकांश क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। महिलाएं सामाजिक व्यवस्था में पिछड़ी हुई हैं,

जिसका मुख्य कारण है:शिक्षा की कमी,जागरूकता का अभाव,रोजगार ढांचे में कम भागीदारी,अधिकांशत: अपने कृषि कार्यों में ही संलग्न रहना,पारंपरिक सामाजिक मानदंडों का प्रभाव । ये सभी कारक बुंदेलखंड में महिलाओं को विकास के मामले में पीछे धकेल रहे हैं। क्षेत्र में व्याप्त पितृसत्ता और महिलाओं की द्वितीयक सामाजिक स्थिति उनके पिछड़ेपन का प्रमुख कारण है।

महिला और पुरुष साक्षरता में असमानता यह दर्शाती है कि शिक्षा के माध्यम से आगे बढ़ने की इच्छा महिलाओं में अपेक्षाकृत कम है, जो सामाजिक पिछड़ेपन को दर्शाता है। हालांकि, डेटा यह भी दिखाता है कि महिलाओं को अवसर मिल रहे हैं और वे विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं।

स्वास्थ्य के मामले में, बुंदेलखंड की महिलाओं की स्थिति आंशिक रूप से बेहतर है, क्योंकि वे चिकित्सा सुविधाओं का लाभ ले रही हैं। उनके बच्चों को भी उचित स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं मिल रही हैं।

इस अध्ययन में यह भी सामने आया कि उत्तर प्रदेश में शिशु मृत्यु दर (IMR), मध्य प्रदेश की तुलना में अधिक है। हालांकि, कुल मिलाकर मध्य प्रदेश–बुंदेलखंड का प्रदर्शन उत्तर प्रदेश–बुंदेलखंड की तुलना में बेहतर पाया गया है।

## संदर्भ सूची


1. बोरा, जे. के., और सैकिया, एन. (2018). भारतीय जिलों में नवजात और पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर: सतत विकास लक्ष्य 3 के संदर्भ में विश्लेषण। भारत के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS), 2015–2016 का विश्लेषण।
2. भारत की जनगणना, 1991। जनगणना संचालन निदेशालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली।
3. भारत की जनगणना, 2001। जनगणना संचालन निदेशालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली।
4. भारत की जनगणना, 2011। जनगणना संचालन निदेशालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली।
5. मध्य प्रदेश का सांख्यिकीय सारांश, 2022। अर्थशास्त्र और सांख्यिकी निदेशालय, उत्तर प्रदेश सरकार, भारत।
6. उत्तर प्रदेश का सांख्यिकीय सारांश, 2023। अर्थशास्त्र और सांख्यिकी निदेशालय, उत्तर प्रदेश सरकार, भारत।